ONLINE CLASS ①

G.D. MISHRA INSTITUTE OF HIGHER STUDIES RUSAR

DEVENDRA SIR   DATE - 29.04.2020

UNIT - I

EPC - I READING AND REFLECTION ON TEXTS

बौद्ध साहित्य से कथाएँ (जातक)

रुरु मृग की कथा

रुरु एक मृग था। सोने के रंग में ढला उसका सुन्दर सजीला बदन; माणिक, नीलम और पन्ने की कांति की चित्रांगता से शोभायमान था। मखमल से मुलायम उसके रेशमी बाल, आसमानी आँखें तथा तराशे स्फटिक से उसके खुर और सींग सहज ही किसी का मन मोह लेने वाला था। तभी तो जब वह वन में चौकड़िया भरता तो उसे देखने वाला हर कोई आह भर उठता।

जाहिर है कि रुरु एक साधारण मृग नहीं था। उसकी अप्रतिम सुन्दरता उसकी विशेषता थी। लेकिन उससे भी बड़ी विशेषता यह थी कि वह विवेकशील था और मनुष्य की तरह बात-चीत करने में भी समर्थ था। पूर्व जन्म के संस्कार से वह ज्ञात था कि मनुष्य स्वभावतः एक लोभी प्राणी है और लोभ वश वह मानवीय करुणा का भी प्रतिकार करता आया है। फिर भी सभी प्राणियों के लिए उसकी करुणा प्रबल थी और मनुष्य उसके करुणा भाव के लिए कोई अपवाद नहीं था। यही करुणा रुरु की सबसे बड़ी विशिष्टता थी।

एक दिन रुरु जब वन में स्वच्छंद विहार कर रहा था तो उसे किसी मनुष्य की चीत्कार सुनायी दी। अनुसरण करता हुआ जब घटना स्थल पर पहुँचा तो उसने पास की पहाड़ी नदी की धारा में एक आदमी को बहता पाया। रुरु की करुणा सहज ही फूट पड़ी।

classmate
Date
Page

और तत्काल पानी में कूद गया और डूबते व्यक्ति को अपने पैरों को पकड़ने की सलाह दी। डूबता व्यक्ति अपनी घबराहट में रुरु के पैरों को न पकड़ उसके ऊपर ही सवार हो गया। नाजुक रुरु उसे झटक के अलग कर सकता था मगर उसने ऐसा नहीं किया। अपितु अनेक कठिनाईयों के बाद भी उस व्यक्ति को अपनी पीठ पर लाद बड़े संयम और मनोबल के साथ ~~किनारे~~ किनारे पर ला खड़ा किया।

सुरक्षित आदमी ने जब रुरु को धन्यवाद देना चाहा तो रुरु ने उससे कहा "अगर तू सच में मुझे धन्यवाद देना चाहता है तो यह बात किसी को ही नहीं बताना कि तूने एक ऐसे मृग द्वारा ~~पुनर्जीवन~~ पुनर्जीवन पाया है जो एक विशिष्ट स्वर्ण-मृग है क्योंकि दुनिया के लोग जब मेरे अस्तित्व को जानेंगे तो वे निःसन्देह मेरा शिकार करना चाहेंगे। इस प्रकार उस मनुष्य को विदा कर रुरु पुनः अपने निवास स्थान पर चला गया।

कालांतर में उस राज्य की रानी को एक स्वप्न आया। उसने स्वप्न में रुरु साक्षात दर्शन कर लिए। रुरु की सुन्दरता पर मुग्ध और हर सुन्दर वस्तु को प्राप्त करने की तीव्र अभिलाषा से रुरु को अपने पास रखने की उसकी लालसा प्रबल हुई। तत्काल उसने राजा से रुरु को ढूँढकर लाने का आग्रह किया। सत्ता में मद में चूर राजा उसकी याचना को ठुकरा नहीं सका। उसने नगर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो कोई भी रानी द्वारा कल्पित मृग को ढूँढने में सहायक होगा उसे वह एक गाँव तथा दस सुन्दर युवतियाँ पुरस्कार में देगा।

अपने समान्य बालकों को प्राथमिक शिक्षा के पूरा किये बिना स्कूल से हटा लेते हैं तो उनसे यह आशा कैसे रखी जा सकती है। इस वर्ग समाज के लोगों की विचारधारा के चलते आज भी हम 6 से 14 वर्ष के बालकों की प्राथमिक शिक्षा को सुनिश्चित नहीं करवा सके। इस समाज के लोग उदार विचारों से ही वंचित नहीं बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी बहुत कमजोर है। इन्हीं कारणों से अपव्यय तथा अवरोधन की समस्या का पूरी तरह से समाधान नहीं कर पाये। इन लोगों ने आज भी लड़के और लड़की के बीच भेदभाव किए हुऐ है। इस प्रकार के समाज से आशा नहीं की जा सकती कि विद्यालय में अपने बालकों को भेजने में सक्रिय रूप से योगदान देंगे।

खुली समाज से संबंध रखने वाले लोगों ने कुछ अंशों तक समावेशी स्कूल की शिक्षा में सफलता मिल सकती है लेकिन पर्याप्त रूप से अभी संभव नहीं है। शहर के सरकारी स्कूलों में तो सरकार सक्रिय रूप से समावेशी शिक्षा को सुनिश्चित करने का आश्वासन दे सकती है लेकिन गैर सरकारी स्कूलों को समावेशी स्कूल में परिवर्तित करना असम्भव तो नहीं परन्तु कठिन बहुत है। शहरों में समान्य स्कूलों में परिवर्तित करना व्यवस्थाएँ देकर विरोध करेंगे उनका यह तर्क है कि हमारे समान्य बालकों को सुचारु रूप से होनेवाली शिक्षण प्रक्रिया में कमी आएगी। इस प्रकार हम देखते हैं तो समावेशी शिक्षा को समाजिक बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।

= ० =

classmate
Date
Page

राजा ने उसी तीर से जब उस व्यक्ति का संहार करना चाहा तो करुणावतार मृग ने उस व्यक्ति का वध न करने की प्रार्थना की।

रूरु की विशेषताओं से प्रभावित राजा ने उसे अपने साथ अपने राज्य में आने का निमंत्रण दिया। रूरु ने राजा के अनुग्रह का नहीं ठुकराया और कुछ दिनों तक वह राजा के आतिथ्य को स्वीकार कर पुनः अपने निवास-स्थान को लौट आया।

— o —